धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जुलाई - अगस्त - 2012

सेवक वा स्वास्तित्व अंक

* देवात्मा फरमाते हैं
* एक विशेष साथी सेवक
* *श्रीमान डाक्टर एच. वी. सोनपार*
* ऐ मनुष्य! तू अपने आत्मा की सुध ले
* हे मन तू कुछ तो सोच
* अपने आपको जानो
* अपने प्रति मिथ्या विश्वास

देवात्मा फरमाते हैं

4 अगरूत सन् 1928

तुम किसी भी शुभ काम के लिए सदा वफादार रहो, किसी दिक्कत तकलीफ के आने पर पीठ दिखा कर पीछे को न भाग जाओ। देवरत्न ने अपने 24 वर्ष निष्फल गंवाए। समाज की हिस्टरी में हम उसकी क्या तारीफ करें? दीवान हासामल जी के विषय में हम ने कई दफा यह कहा है कि यदि वह बेवफा हो कर न मरते, तो हम प्रति वर्ष उनकी वर्षगांठ मनाते, परन्तु अब क्या हम उनकी ख़ाक वर्षगांठ मनाएं, सभा में उनकी किस बात की प्रशंसा करें? क्या बेवफाई की प्रशंसा करें? तुम यदि आज हमें एक पैन्सिल उपहार में दो और कल उसे उठा ले जाना चाहो, तो तुम ने हम पर क्या कृपा की? कुछ भी नहीं । इसी प्रकार यदि कोई जन दान दे कर फिर उसे वापिस लेना चाहे, तो उस की ऐसी गति कृपा की नहीं, बल्कि बहुत दुख देने वाली होगी। यदि किसी जन का यह ब्रत हो कि मेरी जान रहती हो तो रहे, जाती है तो जावे, मेरा गला कटता है तो कट जावे, रहता है तो रह जावे, मेरी बदनामी होती हो और चाहे नेकनामी हो परन्तु मैं हर हाल में अपने उच्च लक्ष्य के लिए वफादार रहूंगा, तो वह अवश्य सफल काम होगा। यदि ऐसा जन अकेला है उसके विरोधी बहुत से हैं, तो इसमें शक नहीं कि उसे बहुत सी विरोधी शक्तियों के साथ मुकाबला करना पड़ेगा, परन्तु वफादार रहने पर वह अन्त में सफल काम होगा। क्या तुम नहीं देखते कि हमारे हज़ारों विरोधी है और हमें उन सबके साथ जंग करना पड़ता है? फिर भी हमारी शक्तियां निष्फल नहीं जातीं, बल्कि इस जंग में हमारी कामयाबी का रास्ता खुलता जाता है। यह सच है कि हमें अपने मिशन के लिए जैसे योग्य आत्मा चाहिए थे, वह हमें यह देश नहीं दे सका और इसलिए हमारा बहुत सा परिश्रम निष्फल चला गया। परन्तु हम फिर भी बराबर अपने लक्ष्य की जय के काम में डटे रहे हैं तुम लोग कठिनाईयों का मुकाबला करके शुभ काम के लिए वफादार रहोगे, तो उससे जहां अपना भला करोगे, वहां देव समाज की हिस्टरी में अपना ऐसा उच्च प्रभाव डालने वाला दृष्टांत छोड़ जाओगे जो आने वाली नसलों को उभारने का कारण होगा। जो लोग अपने किसी शारीरीक सुख के पीछे, या धन बीवी, बच्चों के पीछे जाकर अपने उच्च लक्ष्य से बेवफा बन जाते हैं, उनका कुछ नहीं बनता और वह औरों के लिए भी बुरा दृष्टान्त पैदा करते हैं। तुम्हारे लिए यदि संभव हो, तो तुम अपना उच्च दृष्टान्त प्रदर्शन करो और जिस जिस शुभ काम के लिए तुम लोगों ने अपनी ज़िन्दगियां अर्पण की हैं उस शुभ काम के लिए सदा वफादार रहो इसी में बहादुरी है और इसी में भलाई है।

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 7 – 8

जुलाई – अगस्त – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

एक विशेष साथी सेवक

(प्रिंसीपल श्रीमान धर्मवीर जी)

आपका जीवन खूबीयों का हसीन मंजर था। शारीरिक, मानसिक और नैतिक सुन्दरता आपके रूप में रोशन थे।

आप एक ऋषि माता पिता की सन्तान थे। बेशक माता का बिछोड़ा तो बचपन में ही हो गया, परन्तु पिता की फरिश्ता सीरत गोद में आपको प्रतिपालित होने का अवसर मिला। बड़े होकर जहां उच्च शिक्षा ने आपके दिमाग को रोशन किया, वहां देवात्मा के जगत की तीन महान हस्तियों के सम्पर्क ने आपके व्यक्तित्व को हार्दिक पक्ष से भी चमका दिया। श्रद्धेय श्रीमान ध र्म बल जी, श्रद्धेय श्री कनल जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के महान जीवन की छाप आपके जीवन पर प्रत्यक्ष थी। पंजाब शिक्षा जगत में आपका विशेष स्थान बन गया था। चोटी के प्रिंसीपल समझे जाते थे। माहरे तालीम तस्सवर किए जाते थे। पंजाब युनिवर्सिटी के सैनेट में उनको स्थान प्राप्त था। आपको एक बहुत खूबसूरत जिस्म प्राप्त था। आपका व्यक्तित्व देखने में आकर्षक था। आपका रंग साफ, कद लम्बा और स्वस्थ्य शरीर था। वह सेहत का अच्छा बोध रखते थे। 70 वर्ष के होकर भी 50 वर्ष के दिखाई देते थे। सैर, खुराक और परहेज़ सम्बन्धी बहुत आला होश रखते थे।

आपको बहुत अच्छा दिमाग प्राप्त था। उच्च शिक्षा के अध्ययन ने आपके दिमाग को विशेष रूप से रोशन कर दिया था। पुस्तकों के अध्ययन का बहुत शौक था। पढ़ना और पढ़ाना उनके जीवन का मिशन था, फिलासफी और विज्ञान और डाक्टरी की पुस्तकें बहुत पढ़ते थे। आपका ज्ञान बहुत विस्तृत था।

आप देवात्मा की फिलासफी के रोशन पंडित थे। एक एक शब्द की गहराई को विशेष रूप से अनुभव करते थे। बहुत अच्छे विचारशील थे, भिन्न भिन्न विषयों पर सोच विचार करते रहते थे।

आप एक आला दर्जे के लेखक के चिन्ह भी रखते थे। आपके लेख बहुत उच्च कोटि के होते थे। माता पिता और भाई बहन के सम्बन्ध में भी आपके लेख कमाल के होते थे। नेचर के रूप पर आपकी एक लेख माला रोशनी से भरपूर है, जो आपकी मान्सिक उत्तमता का सबूत है। महान विज्ञानियों को छोड़ इस विषय पर साधारण आदमी की तरफ से ऐसा लेख दुर्लभ

है।

आपका सौभाग्य था कि आपको एक असाधारण पवित्र और उच्च जीवन संचारक वातावरण में प्रतिपालित होने का शुभ अवसर मिला, जिसने आपको कीमती गुणों की खान बना दिया। जिन्सी पवित्रता आपके जीवन का महान अंग था। आपका यह अंग निहायत काबले रशक था। आपने अपनी सारी जवानी नौजवान लड़कियों की शिक्षा सम्बन्धी सेवा में व्यतीत कर दी। सारी उमर कमाल पाक दामन रहे। आपकी पवित्रता एक उदाहरण थी। देव समाज का गौरव था, दूसरों की बेटियों और बहनों को अपनी पुत्रियों की तरह अनुभव करते थे।

भेड़ियों से भरी इस दुनियां में पवित्रता के ऐसे फरिश्ते कहां नसीब होते हैं। इस पक्ष में वह फख़्रे कौम और फख़्रे वतन थे।

आप एक ऋषि बाप के भक्त और आज्ञाकारी सन्तान थे। आप पिता के उज्जवल, महान और उपकारी रूप को जिस गहराई से देखते थे, उसका अनुमान तक लगाना बहुत कठिन है। पिता के लिए गहरे प्यार, श्रद्धा, सत्कार, सेवा और त्याग की ज़ोरदार गंगा सदा उनके हृदय में बहती थी। पिता की याद के ख्याल मात्र से ही उनका सारा अस्तित्व झूम जाता था। अकीदत और श्रद्धा के पवित्र जल से आपकी अति खूबसूरत मोटी मोटी आंखें भर आती थी। उच्च भावों की अति गहरी महसूसात से उनके बदन का रोम रोम खड़ा हो जाता था। पिता के लिए प्यार और अकीदत का जलवा आपके किरदार से सदा फूट फूट पड़ता था। आप एक आधुनिक श्रवण कुमार थे। आपकी पिता भक्ति के शीशे में हज़ारों आवारा सरकश और एहसान फरामोक्ष बच्चों को अपनी घिनौनी सूरत दिखाकर शर्मसार करने के सामान मौजूद थे। जब कभी भी आप इस सम्बन्ध में कुछ ब्यान फरमाते तो अजीब अन्दाज में आपका मुख मण्डल रोशन हो उठता। विशेष तस्कीन की खुशी आपके हृदय पर नाच करने लगती जो दूसरों को बहुत प्रभावित करती थी।

श्रद्धा और अकीदत के बहुमूल्य और दुर्लभ भावों के बीज आपने विरासत में हासिल किए जो आला माहौल में विकसित होते गए। आप महान जीवनों के लिए बहुत श्रद्धा और सत्कार के भाव रखते थे। फ़िरोज़पुर में सन् 1957 के महोत्सव के उपरान्त उन्होंने खड़े होकर यादगारी शब्द कहे थे। "इस विशाल हाल में देवात्मा सत्गुरू की मनोहर छवि का शोभायमान होना और देव स्त्रोत और देव आरती का गान होना, जितना बड़ा सौभाग्य है, वह ब्यान से बाहर है।" उनके इज़हार ने जनता के दिलों को श्रद्धा से भर दिया।

आप अपने एक एक श्रद्धा भाजन के सामने, अपनी खुदी को बहुत कुछ मिटा देते थे। उनके सन्मान और इच्छाओं को कमाल दर्जे ख़्याल रखते थे। एक बार किसी ज़रूरी काम से वह श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के साथ चण्डीगढ़ आए। सफर के दिन भर के संग्राम के साथ श्रीमान जी थक कर चूर हो गए थे। आपने जहां श्रद्धेय श्रीमान जी के आराम और सहूलियत का ध्यान रखा, वहाँ एक चिलमची में स्वंय गर्म पानी करके उनके स्वंय चरण धोने का सौभाग्य प्राप्त किया। आपकी उमर उस समय लगभग 60 वर्ष की थी। विकासालय की एक सभा में जब श्रद्धेय श्रीमान जी ने इस सेवा प्राप्ति की सराहना करके खुशी प्राप्त की, वहां प्रकाश करते करते आंखों से जारोकतार आंसू बहने लगे। उपस्थित जनों के दिल श्री धर्म वीर जी के प्रति गहरे सम्मान, रशक से भर गए। संसार ने इस प्रकार की

श्रद्धा से भरपूर प्रिंसीपल अभी देखने हैं।

हमदर्दी की दौलत आपने पूर्वजों से बहुत गहरी प्राप्त की थी। बिमारों, कमज़ोरों और बूढ़े लोगों के लिए वह हृदय की गहराई से प्रेरित होते थे। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चुपचाप खुले दिल से तत्पर रहते थे। बहुत सारे बच्चों के जीवन बिना कुछ खर्चा लिए संवार दिए। कितने असहायों का सहारा बने, कितनी स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान की, इस सब का अनुमान लगाना कठिन है। कुछ लोग आपके हमदर्दी भरे व्यवहारों को सामने लाकर उन्हें कबीर भक्त कहते थे। आप उच्च दर्जे के उदार थे। उदारता कूट कूट कर उनमें भरी हुई थी। बहुत सहनशील थे। खराब से खराब जन के साथ भी निर्वाह कर सकते थे। कभी किसी को छोड़ना, निकाल देना या नौकरी से निकाल देना, वह जानते ही नहीं थे। एक बार जो आ गया, बस सदा के लिए टिक गया। आपके व्यवहार में बहुत लचक थी।

फर्ज़ और ज़िम्मेवारी के खूबसूरत अंगों से सुशोभित थे। सारा जीवन घोर संग्राम और मेहनत का जीवन था। कालिज के प्रति अपनी ज़िम्मेवारी के लिए खूब भाग दौड़ करते थे। पाकिस्तान के साथ लड़ाई के दिनों में फिरोज़पुर में गोलाबारी हो रही थी। सारा शहर खाली हो गया, कालिज में 2-4 को छोड़ कर कोई नहीं था, परन्तु आप वफादार सिपाही की तरह डटे रहे। दो बार माननीय देव समाज कौंसल ने अपने एक मैंबर को उन्हें वहां से लाने के लिए भेजा, परन्तु उन्होंने उनकी भी तसल्ली करवा दी और उन्हें खाली वापिस आना पड़ा। फर्ज की अदायगी तो कोई उनसे सीखे। इतने बड़े खतरे में भी अपना फर्ज़ निभाया कि कालिज के एक तीले तक की हानि नहीं होने दी, नहीं तो शायद ही वहां कुछ बचता।

फिरोज़पुर कालिज की भरपूर सेवा करके विशाल रूप दे दिया। आपने कई नई संस्थाओं को अपने संग्राम और दूरदर्शिता से जन्म दिया। दिल्ली नगर का नेहरु माडल स्कूल, चण्डीगढ़ का गर्लज़ सीनियर सैंकडरी स्कूल और अन्य जायदादें बनाना उनकी सफल योजनाओं का ही फल है। विद्या सम्बन्धी संस्थाओं के सम्बन्ध में उनके अलग तरह के ही अरमान थे।

आप एक योग्य पुत्र, योग्य पति और योग्य पिता थे। पिता के देहान्त के उपरान्त उन्हें आधा लाख के करीब जो विरासत में मिला, वह सारा धन अपनी सौतीली माता को सौंप दिया। वह माता अपने इकलौते सौतेले पुत्र के प्रति सदा गर्व से भरी रहती थी। मां की थोड़ी सी भी तकलीफ उनको गहराई तक चोट करती थी और उन्हें हिला देती थी।

आपकी नेक पत्नी को सदा आप जैसे उच्च और योग्य पति के साथ का सौभाग्य अनुभव होता रहा। वह अपने इस सम्बन्ध पर पाक फख़र करती थी।

आप के ज्येष्ठ पुत्र को सदा यह गिला रहा कि पापा मेरे भेंट में भेजे हुए कुछ डालरों के डराफट को फाड़ कर फैंक देते थे। वह सदा यह कहते कि मैंने बच्चों के विकास के लिए सेवा की है, न कि उन्हें निजी सहायता का साधन बनाने के लिए।

आपका व्यक्तित्व बहुत आकर्षणीय था। आप मानवता के ऊंचे इन्सानों की कतार में से थे। देव समाज का कई अंगों में आप गौरव थे। गुरु जगत की आप विशेष शोभा और रौनक थे।

(बलदेव सिंह)

श्रीमान डाक्टर एच. वी. सोनपार

1. असाधारण सात्विक प्रकृति

मेरी डाक्टर हासानन्द सोनपार से जानकारी 1898 में हुई थी जब वह गवर्नमैन्ट हाई स्कूल में पढ़ते थे। मैं उनसे ऊपर की क्लास में पढ़ता था। हमारी आपस में कोई मित्रता नहीं थी। वह बहुत अच्छे गायक थे इसलिए स्कूल में उन्हें सब जानते थे और इस रूप में मैं भी जानता था। हमारी मित्रता 1902 में बढ़ी जब हम दोनों ने ही गायकबाड़ बड़ौदा कालेज में पढ़ना शुरू किया। कालेज की छुट्टियों में वह एक दिन मेरे घर आए और मुझे घर में ना पाया। उन्हें पता लगा कि मैं देव समाज के महान कर्मचारी श्रीमान भाई मोहनदेव जी के पास मिलने गया हूं। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि मैं उन्हें उनके पास ले जाऊं। मैं उन्हें उनके पास ले गया और पहली ही संगत से डाक्टर सोनापारजी का सारा जीवन बदल गया। वह बहुत मांसाहारी थे। दिन में चार-पांच बार मांस का भोजन सेवन करते थे। उन्होंने भाई मोहन देव जी के कहने पर मांस सेवन छोड़ने का प्रण किया और सारे जीवन में इस प्रण को निभाया।

श्रीमान डाक्टर सोनापारजी के परिवर्तन पर हमारे शहर में हल चल मच गई। वह चोटी के परिवार से सम्बन्ध रखते थे। स्वभावत: ही उनके परिवार के साथ शहर के बड़े-बड़े लोग सम्बन्धित थे। कुछ समय के लिए इनका परिवर्तन उच्च कोटि के समाज में बातचीत का विषय बना रहा। उन्हें प्रसिद्ध बुजुर्गों के पास ले जाया गया ताकि वह उन्हें देव समाज छुड़वाने का प्रयत्न करें। परन्तु ज्यों-ज्यों उनका विरोध ज्यादा हुआ डाक्टर सोनपार जी का देव समाज के साथ लगाव बढ़ता गया। वह फरवरी 1904 में देव समाज के सेवक बन गए। उसी वर्ष वह पूजनीय भगवान देवात्मा के दर्शनों के लिए लाहौर आए। भगवान के दर्शन करने से उनके सात्विक हृदय पर जादू का असर हुआ। दुनिया की शानोशौकत अर्थरहित हो गई। दुनियां के सुख और सामान फीके पड़ गए। भगवान के कार्य में लग जाने में ही उन्होंने अपने जीवन की सफलता देखी। उन्होंने उसी समय संकल्प किया कि वह बी. ए. पास करके अपना जीवन भेंट करेंगे। यह संकल्प उनकी बिरादरी और विशेष कर उनके परिवार के लिए असहनीय आघात था। बिरादरी और परिवार ने पूरा संग्राम किया कि डाक्टर सोनापार जी को इस संकल्प से हटा दें। परन्तु डाक्टर सोनापार जी एक विशेष प्राकृति लेकर पैदा हुए थे। उनकी सात्विक प्रकृति ने देव प्रभावों द्वारा बल और विकास पाकर इनको अपने संकल्प पर सच्चा रखा। 1905 में बी. ए. का इम्तिहान समाप्त करते ही वह भगवान देवात्मा के दरबार में पहुंच गए। भगवान ने उन्हें देव समाज स्कूल मोगा में अध्यापक नियुक्त करके देव समाज की सेवा का अवसर दिया। दुर्भाग्य से वह बी. ए. में फेल हो गए। वह इम्तिहान पास करने के लिए वापस चले गए। इम्तिहान पास करने के बाद उन्हें गवर्नमैण्ट की नौकरी 90 रू० पर मिल गई और 1909 तक उन्होंने यह नौकरी की। परन्तु वह खुश न थे-क्योंकि वह देव समाज में परोपकार का जीवन बिताने के इच्छुक थे। जब उन्होंने भगवान को अपनी इच्छा प्रगट की कि वह उनके दरबार में ही काम आना चाहते हैं तो भगवान ने 30 रु० वेतन पर मोगा स्कूल में काम करने की आज्ञा दी। डाक्टर सोनपार जी ने खुशी-खुशी यह त्याग का जीवन स्वीकार किया। दो तीन वर्ष बाद उन्हें भगवान देवात्मा ने अपना कर्मचारी बनने का शुभ अवसर दिया।

2. कठिनाईयों के समय के सूरमा

डाक्टर सोनपार जी ने जीवन में कई विशेष गुण विकसित किए। उनमें से एक विशेष गुण यह था कि वह बहुत बहादुर थे। कठिनाईयों के समय के सूरमा था। देव

समाज की संस्थाओं पर जब-जब आकस्मिक विपत्ति आती थी तो डाक्टर सोनपार जी को संस्था का मुख्य अध्यापक बनाकर भेजा जाता था। श्रीमान लाला गंगाराम जी देव समाज स्कूल मोगा के प्रसिद्ध हैडमास्टर थे। उनका शहर में बहुत अच्छा रसूख था। उन्होंने हैडमास्टर के पद से त्याग पत्र दे दिया। वह देव समाज के लिए मुसीबत का वक्त था और देव समाज का मोगा स्कूल, देव समाज की दो मुख्य संस्थाओं में से एक स्कूल था। मोगे में ऐसे लोग थे जो इस परिस्थिति का फायदा उठाकर उसे हानि पहुंचाना चाहते थे। स्कूल के इस संकट के समय में भगवान देवात्मा ने डाक्टर सोनपार जी को स्कूल की बागडोर सौंपी। उन्होंने स्कूल को ऐसी सफलता से चलाया कि लोग श्रीमान गंगाराम जी को भूल गए। स्कूल के दुश्मनों को मुँह की खानी पड़ी। डाक्टर सोनपार जी के साहस, वीरता और उत्साह ने दुश्मन के मनसूबों को असफल कर दिया।

इसी प्रकार 1915 में देव समाज गर्ल्ज स्कूल फिरोजपुर पर मुसीबत आई। यह देव समाज की दूसरी मुख्य संस्था थी। इस स्कूल के हैडमास्टर बहुत सफल हैडमास्टर थे और लोकप्रिय थे। वह देव समाज स्कूल छोड़कर चले गए। इस संकट के समय भी भगवान देवात्मा ने डाक्टर सोनपार जी को नया हैडमास्टर बनाकर भेजा। उन्होंने अपने साहस और काबलियत से इस संस्था को केवल हानि ही नहीं होने दी परन्तु इस का नाम और भी ऊंचा किया।

1917 में देव समाज ने लाहौर में दीवान हासामल देव समाज स्कूल खोला। उस समय जितने लोग देव समाज की संस्थाओं में काम करते थे उनमें से भगवान देवात्मा ने डाक्टर सोनपार जी को ही नई संस्था का हैडमास्टर नियुक्त किया। लाहौर में बड़े-बड़े स्कूल थे और प्रसिद्ध स्कूल थे। वहां देव समाज के स्कूल के लिए नाम पैदा करना बहुत कठिन काम था और इसके लिए असाधारण काबलियत और वीरता का जज़बा चाहिए था। और वह गुण डाक्टर सोनपार में थे। उनमें इन्तजामिया या संचालक योग्यता असाधारण थी। उनमें (Resourcefulness) सूझबूझ बहुत थी। उनका हृदय सूरवीर का हृदय था। आठ वर्ष तक उन्होंने इस संस्था को चलाया और बढ़ाया। उसके बाद समाज ने उन्हें किसी दूसरे काम पर लगा दिया।

कुछ वर्ष बाद लाहौर देव समाज स्कूल पर भी मुसीबत के दिन आ गए तब देव समाज कौन्सिल ने फिर डाक्टर सोनपार जी को इस स्कूल का चार्ज सौंपा। उन्होंने करामात कर दिखाई। डूबती हुई नैया को किनारे पर ले आए। हम सब कौन्सलरज ने ऐसी असाधारण सेवा के लिए उनकी बेअखत्यार सराहना की। संक्षेप में जब भी देव समाज की संस्थाओं पर आपत्ति या Emergency आ पड़ती कि जिसमें संचालक योग्यता, सूझ-बूझ और साहस वा वीरता की असाधारण जरूरत होती थी तो डाक्टर सोनपार जी को ही वह सौंप दी जाती थी। इनकी वीरता और साहस की आखिरी और प्रमुख परीक्षा तब हुई जब देश का बंटवारा हुआ। देव समाज का हैड ऑफिस लाहौर था। देव समाज की सम्पति, पुस्तकालय और विशेषकर देवालय वहीं पर थे। देश के बंटवारे के समय देव समाज के छोटे बड़े सब लोग लाहौर से आ गए। डाक्टर सोनपार जी ही अकेले सेवक थे जो वहां पर डटे रहे। वह उस समय देव समाज के मुख्य संचालकों में से न थे इसलिए उनपर संचालकों की कोई जिम्मेदारी न थी। केवल देव समाज के ही लोग देव समाज छोड़कर नहीं गए, इर्द-गिर्द के सब लोग छोड़कर चले गए थे। डाक्टर सोनपार जी ही अकेले श्री देव गुरु भगवान मेमोरियल मन्दिर में रहते रहे। यद्यपि मन्दिर में सब तरफ मुसलमान ही मुसलमान थे जिनमें से कोई भी किसी वक्त छुरा मार कर उनकी हत्या कर सकता था। ऐसे भयानक हालात में भी वह सूरमा साबित हुए। उनका यह संकल्प था कि वह मन्दिर छोड़कर नहीं जाएंगे। जब तक उन्हें पाकिस्तान सरकार जबरदस्ती बाहर न निकाल दे। वह अपने संकल्प पर

सच्चे रहे और जान पर जोखों और खतरों को खुशी खुशी बरदाश्त किया। जब पाकिस्तान पुलिस ने उन्हें मन्दिर से निकाल दिया तब ही वह हिन्दुस्तान आए।

3. कुछ मोह बन्धनों से वैराग

भगवान देवात्मा के चरणों में रह कर डाक्टर सोनपार जी ने कई सद्गुण विकसित किए थे जिनसे उनका जीवन सुन्दर बन गया। वह बच्चों के मोह बन्धन से ऊपर थे। उनके दो पुत्र थे। उनका इन्होंने अच्छा लालन-पालन किया। पढ़ाया लिखाया और अपने पैरों पर उन्हें खड़ा किया। ऐसी सेवा से वह उनके मोही न बने। नेचर ने उनके इस सद्गुण की परीक्षा ली। उनमें से एक लड़का बहुत अच्छी डीलडौल वाला नौजवान अवस्था में टाईफाईड में ग्रस्त हो गया। डाक्टर सोनपार जी देव समाज के काम पर सिन्ध गए हुए थे। उन्हें उनके लड़के की बीमारी की खबर दी गई। परन्तु वह अपना काम छोड़ कर लाहौर नहीं आए। अपने हितकारियों को अपने लड़के के लिए लिखते रहे और बाकायदा उसकी खबर रखते रहे।

दुर्भाग्य से उनके लड़के की हालत खराब हो गई। परन्तु तब भी डाक्टर सोनपार जी अपना समाज का काम छोड़ कर न आए। उनकी अनुपस्थिति में उनके लड़के की मृत्यु हो गई। उन्हें बहुत दुःख हुआ - ऐसा दुःख बड़े-बड़े को जड़ से उखाड कर फेंक देता है। उनका वैराग्य एक बड़ के पेड़ के समान प्रमाणित हुआ और वह इस दुख की बाढ़ में भी कायम रहा। उन्होंने देव समाज के काम में अपने दुख को भुलाया।

केवल बच्चों के सम्बन्ध में ही वह निर्मोही न थे। वह पैसे, पोज़ीशन और शक्ति के भी मोही न थे। उनके अन्तिम दिनों की एक घटना विशेष है। भगवान देवात्मा की अन्तिम शिक्षा के अनुसार "कि प्रचार विभाग में काम करने वालों को वेतन नहीं लेना चाहिए" समाज से अपना वेतन लेना छोड़ दिया। इस त्याग के कारण उन्हें कई बार भूखा भी रहना पड़ा जो उनके वृद्ध शरीर के लिए बहुत कष्टदायक था। उन्होंने भूखा रहना पसन्द किया परन्तु किसी से सहायता की प्रार्थना न की। वास्तव में बहुत सारे सामाजिक जनों को उनके ऐसे त्याग का ज्ञान तक भी न था। उनकी जल्दी मृत्यु का एक कारण यह भी था कि उनके शरीर को काफी खुराक नहीं मिलती थी। परन्तु उन्होंने अपने इस कदम पर कभी अफसोस नहीं किया।

शक्ति के मोह से भी वह निर्मोही थे। उन्हें कई बार शक्तिपूर्ण पद दिए गए। मैं पहले बता चुका हूँ कि किस प्रकार उन्हें समाज की संस्थाओं को बचाने का कठिन काम दिया जाता था और वह किस सफलता से नैया को किनारे पर लगाते थे। और फिर उन्हें उस संस्था से अलग कर दिया जाता था। समाज के उन्हें कई अधिकार देकर वापिस लिए गए। कई ऐसे समयों पर वह ऐसे फैसलों को अन्याय मूलक समझते थे, परन्तु ऐसे अन्यायों से वह समाज के कार्य की सेवा में ढीले नहीं पड़े।

4. भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में पूर्ण विश्वास

श्रीमान डाक्टर सोनपार जी का भगवान देवात्मा के प्रति पूर्ण विश्वास था और उनके लिए अटल वफादारी थी। वह अपना प्रान्त, अपनी बिरादरी और अपने दुनियवी भविष्य को ऐन जवानी की उमर में त्याग करके भगवान देवात्मा के चरणों में आ गए। उन्होंने देव समाज की संस्थाओं की नाजुक अवस्थाओं में स्मरणीय सेवा की। तब भी ऐसी घटनाएं हुई जिनमें बड़ी से बड़ी आत्मा के पैर उखड़ जाते हैं। वह 1909 से 1925 तक स्कूलों में हैडमास्टर या मुख्याध्यापक रहे। 1925 में भगवान देवात्मा ने उन्हें संस्थाओं से अलग कर दिया और सब पद छीन लिए। डाक्टर सोनपार जी ने बिना किसी दिक्कत के अपने पद छोड़ दिए। उन्हें पूरा विश्वास था कि भगवान कोई ऐसा कदम नहीं उठावेंगे जो सत्य और शुभ की माँग न हो। जब उन्हें भगवान का आदेश सुनाया गया तो उन्होंने बेअखत्यार

कहा कि "भगवान का कहना ठीक है।" मैंने उनसे पूछा कि "अब आप क्या करेंगे? क्या आप सिन्ध वापिस चले जावेंगे?" उन्होंने हँस कर उत्तर दिया, "एक सिपाही कभी भी पीठ नहीं दिखाता। वह लड़ कर मरना ही जानता है। मैंने अपना जीवन भगवान को अर्पित किया था वह आज भी अर्पित है। मैंने उसे सुधारना है ताकि वह फिर से भगवान की खुशी का कारण बने।" उन्होंने पहला स्मरणीय कदम यह उठाया कि समाज और भगवान की आज्ञा ली कि वह दान एकत्र करें। वह आज्ञा पाकर बम्बई में दान एकत्र करने चले गए। और यह काम बहुत सफलता से किया। फिर वह लाहौर वापिस आए और कुछ समय समाज की एक संस्था में बिना पैसे के काम किया। वह अब स्कूल के कानून के अनुसार स्कूल में काम नहीं कर सकते थे। वह भगवान के पास लाहौर में रहना चाहते थे। उन्होंने अपने निर्वाह के लिए होम्योपैथी में शिक्षा पाई और होम्योपैथी की दुकान खोली। समाज के सब पदों से अलग किए जाने पर भी, और इसलिए समाज का कोई अंग न रह कर भी, वह कर्मचारियों के समान भगवान देवात्मा के चरणों में अधिक से अधिक रहने के इच्छुक रहे।

भगवान देवात्मा के साथ वफादारी, देवसमाज के साथ वफादारी है। देव समाज के साथ वफादारी का एक लक्षण यह है कि उसका सभासद उसके शासन को स्वीकार करे। एक दुर्घटना के कारण उन्हें कर्मचारी के पद से हटा दिया गया। उन्होंने एक जनरल की न्यांई अपनी एकाकारी उतार कर अपने ट्रंक के तले में रख दी और वह उस घड़ी की इन्तजार में रहे कि कब उन्हें फिर एकाकारी पहनने का अधिकार मिलेगा। वह इस वक्त दिल्ली में थे और यह देश के बंटवारे का समय था। उन्हें यह भी कहा गया कि आप देव समाज साधन-स्थान छोड़ कर चले जायें। उन्होंने कौन्सिल को उत्तर दिया कि मैं आपकी आज्ञा पूरी करूँगा। उन्हें कुछ दिन मकान ढूँढने के लिए दिए गए। उन दिनों में मकान मिलना लगभग असम्भव था। उस समय देव समाज के अन्य जनों को कौन्सिल का ऐसा आदेश कठोर अनुभव हुआ। डाक्टर सोनपार जी भला इस वृद्ध और निर्धन अवस्था में कहां जा सकते थे? लेकिन डाक्टर सोनपार जी ने इस आदेश की पूर्ति के लिए इधर-उधर मकान ढूँढना शुरू किया। मकान ढूँढने के दिनों में वह बीमार हो गए और एक हस्पताल के जनरल वार्ड में दाखिल हो गए। वहां उनकी दशा बिगड़ती चली गई, इसलिए वहां से उन्हें वापिस देव समाज के मकान में लाया गया जहां उन्होंने अपने प्राण दिए।

नोट :- श्रद्धेय श्रीमान कनल जी ने डाक्टर सोनपार जी के देहान्त के पश्चात तीन लेख लिखे जो जनवरी और फरवरी 1949 और अगस्त 1951 में सांइस ग्राउण्ड रिलिज्यन में छपे थे। इन तीनों में से ऐसे भागों का रचनात्मक या स्वतन्त्र अनुवाद ऐसे ढंग से किया गया है ताकि वह सेवक माला के लेखों की तरतीब और शैली के अनुसार हों।

(पी०वी० कनल)

देवगुरू के सेवकों मेरे प्यारे साथियों फख़्र, भारत कौम की आखों के तारे साथियो,
देवगुरू के प्रभावों को पाकर बन गए,
आत्मिक दुनियां के तुम रोशन सितारे साथियो खुशनसीबी मैं भी आपका साथी बना,
पाए तुमसे मैंने हैं उपकार भारे साथियों।
तुम जो आगे बढ़ गए, मुड़ देखना पीछे ज़रा, धर्म सम्बन्धी कोई तुमको पुकारे साथियो।

ऐ मनुष्य! तू अपने आत्मा की सुध ले

जो मनुष्य अपने आर्थिक हालात का ख्याल नहीं रखता और अपने शारीरिक अनुचित सुखों और मानबड़ाई के पीछे जाकर अंधाधुंध अपना धन खर्च करता रहता है और अपनी असली पूंजी और आमदनी से बढ़कर कर्जा लेकर भी खाने-पीने, नए-नए मकान बनाने, अपने बेटे-बेटी के विवाह पर फजूल रुपया बर्बाद करने, घोड़े गाड़ी खरीदने आदि पर बहुत सा रुपया बर्बाद कर देता है या जुआ खेलने आदि पर खूब रुपए उजाड़ता रहता है और उसे जब तक कर्जा मिलता रहता है, तब तक वह इस ओर कुछ ध्यान नहीं देता कि अंधाधुंध कर्जा बढ़ाने का आखिरी नतीजा क्या होगा, वह कर्जे के रुपए को भी अपनी पूंजी या अपनी आमदनी ही समझता है। अब ऐसे जनों का थोड़े दिनों के बाद ही दीवालिया बन जाना एक आवश्यक बात है। हमें बहुत से जनों का निजी अनुभव है कि उन्होंने उचित समय पर अपने आर्थिक हालत को ठीक रखने की ओर कोई उचित ध्यान नहीं दिया और वह अंधाधुंध अपने जिम्मे कर्जा बढ़ाते रहे, आखिरकार जब उन्हें कर्जा मिलता बन्द हो गया और कर्जा देने वालों पर उस जन की आर्थिक खराब अवस्था का भेद खुल गया और उन्होंने अपने रुपयों की वापसी का खूब तकाजा करना आरम्भ किया, तब उसे यह होश आई कि मैं अपनी आर्थिक अवस्था के विचार से जो धनी बना हुआ था, वह मेरा केवल वहम था। उसकी बनी बनाई इज्जत सब खाक में मिल गई। उसके घोड़े गाड़ियां सब बिक गए। उसका मकान भी उसके हाथ से निकल गया। हां, ऐसे लोगों में से एक-एक जन ऐसी मुसीबत में फंस गया कि उसे न दिन को चैन आता है और न रात को आराम मिलता है। उसके दिल में मानो एक आग सी लगी रहती है। इस अवस्था में उसका यह ब्यान होता है कि मानो वह सारी-सारी रात तारे गिन-गिनकर काटता है और उसे कहीं किसी तरह आराम नहीं मिलता। उसका कोई जन अब कुछ भी एतबार नहीं करता। वह अपनी साधारण आवश्यकताएं पूरी करने से भी लाचार हो जाता है। उसकी संतान यतीमों की तरह बन जाती है। वह इतना दुखी हो जाता है कि वह उस दुख से छुटकारा पाने के लिए जहर का प्याला पीकर अपना अंत कर लेता है। उसे यह कुछ बोध नहीं होता कि उसके अन्दर जो आग लगी हुई है, वह उसके शरीर की आग नहीं बल्कि आत्मा की आग है और वह आग ऐसी है कि जो उसके स्थूल शरीर की मृत्यु हो जाने से भी किसी तरह न बुझेगी बल्कि कई अवस्थाओं में स्थूल शरीर की मृत्यु के पश्चात वह और अधिक भड़केगी और पता नहीं उसे और कितना लम्बा समय जलाती रहेगी। ओह! एक-एक नीच इच्छा का गुलाम बन जाना एक-एक मनुष्य की कितनी भयानक बदनसीबी है। यही वह भयानक बदनसीबी है कि जिसमें इस समय प्राय: सारी मानवता बुरी तरह फंसी हुई है। घर-घर नर्क की आग जल रही है। एक-एक नगर और एक-एक शहर में खूब दंगे फसाद हो रहे हैं और मनुष्य-मनुष्य के हाथों रो रहा है। एक दूसरे का कुछ एतबार नहीं करता और एक-एक

जन दूसरे पर खूब अत्याचार कर रहा है। इस अवस्था में केवल साधारण मनुष्य ही फंसे हुए नहीं हैं बल्कि एक-एक सभ्य कहलाने वाली सारी कौम दूसरी कौम की दुश्मन बनी हुई है। एक-एक बादशाह खून पी रहा है, मानो सारी दुनिया खून के आंसू बहा रही है। अब प्रश्न यह है कि यह सारी भयानक लीला क्यों है? क्या इसलिए कि दुनिया में खाने-पीने के सामानों की कुछ कमी है या मकानों की कमी है या विद्या की कमी है या धन दौलत की कमी है और हकूमत की कमी है? कदापि नहीं, कदापि नहीं। इसका मूल कारण यह है कि मनुष्य अपने असल अस्तित्व अर्थात आत्मा की ओर से पूर्णत: बेहोश है। वह उसकी वर्तमानता का कोई सच्चा ज्ञान नहीं रखता। वह उसके बनने और बिगड़ने की ओर से पूर्णत: गाफिल है। वह केवल यही नहीं कि अपने भले की कोई इच्छा नहीं रखता बल्कि अपनी विविध प्रकार की नीच इच्छाओं का बंधुआ होकर ऐसा उल्टा दृष्टा बन चुका है कि अपनी तबाही में अपनी भलाई देखता है। अपने सच्चे हितकारियों को अपना दुश्मन बोध करता है और अपने दुश्मनों को अपना हितकारी समझता है। ऐसी हालत में रहकर वह रात दिन अपने कर्मो को रोता रहता है। ऐसा जन बेशक देखने में कुछ समय के लिए मौज बहार करता हुआ नज़र आता है, परन्तु वास्तव में वह अपने लिए दुख बढ़ा रहा है और उसके लिए आखिरकार वह समय आ जाता है जबकि उसका जीवन महा रोगी बनकर विविध प्रकार के दुखों का घर बन जाता है। वह न केवल इस दुनिया में कई प्रकार की मुसीबतों और उलझनों में ग्रस्त हो जाता है, बल्कि इस दुनिया को छोड़ने के पश्चात और भी अधिक दुर्गति को प्राप्त होता है। वह एक ओर बहुत नीच आत्माओं में रहने को मजबूर होता है कि जो बुरी तरह उसकी जान के लागू बने रहते हैं। दूसरी ओर वह अपनी नीच इच्छाओं की तृप्ति के सामान न पाकर या इन इच्छाओं के पूरा करने की योग्यता न रखकर ऐसा जलता कुढ़ता है कि जिसकी कोई सीमा नहीं है।

तब हे मनुष्य, तेरे लिए यह कितना आवश्यक है कि तू समय रहते-रहते अपने असल अस्तित्व अर्थात् आत्मा की सच्ची रक्षा करने और उसे बेहतर से बेहतर बनाने का यत्न कर। ऐसा करने से तू हर प्रकार से लाभ में रहेगा। तू इस वहम में मत रह कि अभी बहुत समय पड़ा है, आत्मा की फिर सोझी ले ली जाएगी। ऐसा कदापि नहीं है। जो समय गुजरता जा रहा है, वह तुझे आत्मिक कल्याण के अधिक से अधिक अयोग्य बना रहा है और तेरे लिए वह समय आने वाला है जबकि तू अपने भले के पूर्णत: अयोग्य बन जाएगा और तेरे लिए केवल रोने-पीटने और तबाह होने का ही रास्ता बाकी रह जाएगा। तेरा धन तेरे कुछ काम न आएगा। तेरे नीच संबंधी तुझसे सब बिछड़ जाएंगे। तेरा शरीर तुझसे अलग हो जाएगा। तू हर प्रकार से महा कृपापात्र अवस्था को पहुंच जाएगा। इसलिए नितांत आवश्यक है कि तू समय रहते-रहते संभल। नेचर जो धीरे-धीरे विकास की ओर बढ़ रही है और जिसका मुख्य उद्देश्य यही है, उसने अंधकार और विनाश की शक्तियों से घिरे हुए परन्तु कुछ न कुछ अधिकारी अवस्था रखने वाले जनों के परम कल्याण साधन के लिए आखिरकार इस जगत में सच्चे धर्म अवतार भगवान देवात्मा को प्रगट किया है कि

जिनके प्रगट होने के मुख्य उद्देश्य अधिकारी जनों को आत्मबोधी बनाना और उन्हें आत्मिक कल्याण के मार्ग पर डालना है। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने देवसमाज की स्थापना की है और उस देवसमाज में भी एक अद्वितीय संस्था स्थापन की है कि जिसका नाम देवसमाज धर्म विकासालय है। एक मात्र यही संस्था है कि जिसमें अधिकारी जन प्रवेश होकर अपने आत्मा का सच्चा बोध पाते और पा सकते हैं। अपने आत्मा के कल्याण की आकांक्षा और सामर्थ्य लाभ करते और कर सकते हैं। ऐसा अमूल्य लाभ प्राप्त करके वह विशेष रूप से धन्य-धन्य और कृतार्थ हो सकते हैं। तू ने यदि अब तक ऐसी अमूल्य संस्था में पहुंचकर अपने आत्मा की सोझी नहीं ली है, तो अब शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए। तू जैसे बाहर की एक-एक डिग्री की बहुत बड़ी कीमत बोध करता है, वैसे ही उसकी तुलना में इस अनोखी संस्था की महिमा महसूस करनी चाहिए और उसमें प्रवेश करके तुझे जिस प्रकार की डिग्री प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है वह अवसर पूर्णत: अनोखा है। और तेरी जो डिग्री सबसे बढ़िया डिग्री होगी, उसकी तुलना में और कोई बड़ी से बड़ी विद्या की डिग्री भी कुछ मूल्य नहीं रखती। तुझे यह मालूम होना चाहिए कि अब कितने ही अधिकारी जन उसमें पहुंच कर लाभ उठा रहे हैं। तू भी उसमें पहुंच कर अपना कल्याण साधन कर और ऐसे सबसे बढ़िया और महा पुण्य के काम में अपने तन-मन-धन से सहायक बन। इससे बढ़कर तेरे जीवन और उसकी शक्तियों की बेहतरीन सफलता और कुछ नहीं हो सकती।

सत्यदेव संवाद 30 जुलाई 1940

कुछ सोच वक़्त है जा रहा, तेरा कूच निकट है आ रहा,
क्यों है वृथा जन्म गंवा रहा, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।
सुबह होके होती शाम है, यूं ही होती उमर तमाम है,
पीता नीच सुखों के जाम है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।
दुनियां से तुझको प्यार है, सुख स्वाद तेरा दिलदार है,
चाहे होता उसमें ख़्वार है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।
ज़न, बच्चों में मशगूल है, अपनतव पर तू कुर्बान है,
सन्मुख तेरे धन मान है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।
यह तेरा जो घर बार है, मालो ज़र का जो अम्बार है,
यह साथ तेरे दिन चार है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।
अब छोड़ नीच अनुरागों को, कर ग्रहण ज़रूरी त्यागों को,
कर विकसित उच्च अनुरागों को, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।

हे मन तू कुछ तो सोच

हे मन तू कुछ तो सोच! यह ज़िन्दगी सदा रहने वाली नहीं, यह फानी है। तू एक दिन कहीं नहीं था और फिर एक शिशु के रूप में तुमने जन्म लिया। तू बचपन में एक नन्हा वजूद था। प्यारी मां ने तुम्हें गोदी में खिलाया, बोलना सिखाया, बचपन में तबदीली आ गई। खा, पीकर और खेल कूदकर तुम जवान हो गए। वह तोतली ज़ुबान, वह नन्हा, कोमल शरीर बेऐब और बेफरेब ज़िन्दगी, वह तुम्हारे नन्हे नन्हे अंग, हाथ पैर, खेल खिलौने, वह मां की लोरियां और कहानियां, वह खाने पीने के आकर्षण, वह स्कूल का समय, वह सब कुछ बदल गए, जिनसे तुम्हारे बचपन की दुनियां आबाद थी। अब बनावटी नहीं कुदरती दाड़ी मूछें फूट पड़ी हैं। इसी प्रकार शरीर बदल गया है और आगे और परिवर्तित हो रहा है। जो पहले था, वह अब नहीं, जो अब है, वह भी नहीं रहेगा। तेरे यह काले बाल एक एक करके सफेद हो जाएंगे, तू हज़ार यत्न करके, उत्तम से उत्तम कलर लगाकर भी इसे रोक नहीं सकेगा और न ही किसी तरह छुपा सकेगा। यह बालों की सियाही भी मासूम बचपन की तरह तेरे हाथों से छिन जाएगी। यह भरपूर जवानी, यह बलशाली अंगों की यह चमक नहीं रहेगी। यह बूढ़े और निर्बल हो जाएंगे। इनकी ताज़गी, स्फुर्ति, शोख़ी मुठ्ठी में से रेत की तरह फिसल जाएगी। जो आज तुम्हारे पास है, वह कल नहीं रहेगा। जो कल है, वह अगले दिन नहीं रहेगा।

आख़िर तेरे जीवन में आदि के दिन की तरह अंत का दिन भी आ जाएगा। जिस दिन तेरे जीवन की शमा पहले थोड़ी लौ, फिर भरपूर लौ बनेगी और फिर कुछ टिमटिमाके गुल हो जाएगी। फिर तुम लाखों यत्न करके भी इसको रोशन नहीं कर सकेगा।

पहले तेरे हाथ से बचपन गया, अब जवानी जा रही है, और फिर बुढ़ापा भी तेरा अपना नहीं रहेगा। हां, तेरा सुन्दर शरीर, जिस पर तुम्हें अन्त का नाज़ है, यह भी तेरा नहीं रहेगा। उसके साथ ही कुल शारीरिक सुखों और सामानों के अम्बार तेरे शरीर की तरह लोप हो जाएंगे।

कुछ सोच कि जिनके मकबरे और ख़ानगाहों को आज देख रहा है, वह वजूद भी तेरी तरह एक दिन इस दुनियां में वर्तमान थे। वह भी एक दिन बच्चे, जवान वा बूढ़े थे, परन्तु आज वह इन पत्थरों, ईटों या राख की ढेरी के नीचे सदा की नींद सो चुके हैं, तेरा भी अवश्य अन्त होगा। तेरे अति प्यारे, बहुत बड़े सहारे शरीर का भी यही अन्त होगा। तेरा बिस्तर भी उन्हीं कबरों या मकबरों वा ख़ानगाहों में राख के ढेर के नीचे सदा के लिए बिछ जाएगा।

जिस शरीर को तुम इतना प्यार करते हो, जिसको सम्भाल सम्भाल कर रखते हो, जिस पर इतना हार श्रंगार लगाते हो। वह दिन एक राख का ढेर हो जाएगा। इस शरीर को नहाने, धुलाने, खिलाने, पिलाने और सजाने की क्रियांए किसी काम नहीं आंएगी। यह सब संगी साथी छूट जांएगे। अब जिसको बचा बचाकर रखता है, कोई कष्ट नहीं देना चाहता, याद रख वह बच नहीं सकेगा और तेरे हाथ में कुछ नहीं रहेगा। एक कांच के खिलौने की तरह टूट जाएगा। सारे शारीरिक सुख वा सामान फीके पड़ जांएगे। जैसे किसी हकूमत के बदलने से पुराने सिक्के अपना मूल्य खो देते हैं, उसी प्रकार यह सब अपनी कीमत खो देंगे। तेरा मकान तेरी पनाह नहीं बनेगा। तेरी धरती तुम्हें अनाज नहीं दे सकेगी। तेरा ज़र, माल तेरे काम नहीं आएगा सब खोटे

सिक्के बन जाएंगे। मान इज्ज़त की अटारी जो तू बनाए बैठा है, उसका महल घड़म नीचे गिर जाएगा। यह डोर एक दिन टूट के रहेगी। तू भयानक अवस्था में यहां से कूच करेगा। हां, शरीर की अन्तिम क्रिया को भी अपने हाथ से नहीं कर सकेगा। आज जो तू इतना अकड़ता वा इतराता है, रुसवा व ख़्वार होकर, दूसरों का मोहताज होकर उन्हीं के हाथों तेरा शरीर किसी किनारे लगेगा। आप इसका कुछ नहीं कर सकेगा।

हे मन! तू अब कुछ तो सोच तेरा बचपन, जवानी चली गई, बुढ़ापा जा रहा है, बाल सफेद हो गए, जैसे पहले इतना जीवन बीत गया, बाकी देखते ही देखते, हाथ मसलते निकल जाएंगे। खोटे सिक्कों को छोड़, अब समय रहते रहते वह दौलत इकट्ठी कर, जो तेरे साथ जाएगी।

वह दौलत है उच्च जीवन की सेवा की, अपना धन, अपनी शारीरिक शक्तियों को दूसरों की भलाई में खर्च कर। केवल स्वार्थी रहकर कौए की ज़िन्दगी बसर मत कर। पेट तो गोबर का कीड़ा भी भरता है, केवल खाने पीने में ही जीवन बर्बाद न कर। परोपकार और पर सेवा ही ऐसा धन है, जो मरकर भी तुम्हारे साथ जाएगा उसे इकट्ठा कर।

तेरी बेहद खुशकिस्मती है कि तुझे जीवन की असल दौलत बख़्शने की समर्थ्य रखने वाले अति दुर्लभ सत्गुरू प्राप्त हुए हैं। उनसे रूहानी उच्च ताक़तों की दौलत हासिल कर, यह समय फिर हाथ नहीं आएगा। खोटे सिक्कों में और समय बर्बाद न कर। अपने आख़री दिन का दिल दहला देने वाला नज़ारा अपनी आंखों के सामने रख। इस के रोशनी की लौ में अपने जीवन का समय व्यतीत कर।

अपने क्षणभुंगर वा छूट जाने वाले साथियों को पहचान और उनके पीछे ज़िन्दगी बर्बाद मत कर।

अपने सच्चे और मूल सम्बन्धी सत्गुरू को पहचान। इससे पहले कि संसार से तेरा जनाजा उठे, तू जीवन की सदा रहने वाली दौलत इकट्ठी कर, इस दुनियां को हाथ मलते नहीं खुशी खुशी छोड़ जाने की तैय्यारी कर और उसकी इन्तज़ार में पूरी तरह तैय्यार होकर बैठ।

"फिर पछताए कुछ होना नहीं बीता समय हाथ आना नहीं।"

शोक समाचार

बहुत शोक की बात है कि हमारे प्यारे धर्म सम्बंधी श्रीमान मास्टर तेजराम जी कल्याण मल्का अचानक परलोक सिधार गए। वह 11 जून की रात को 8 बजे के करीब अपने गांव के निकट एक दुर्घटना का शिकार हो गए। वह बहुत ही हृष्ट पुष्ट थे। सारा परिवार और गांव भी इस दुर्घटना से दुख ग्रस्त हो गया। वह अपने पीछे अपनी पत्नी और दो बेटे, और एक बड़ा परिवार छोड़ गए हैं। वह अच्छे नेक स्वभाव के मालिक थे। सत्संग में आकर खुश रहते थे।

हम देहत्यागी की परलोक में रक्षा और सहायता के लिए कामना करते हैं। और परिवारिक जनों को धीरज प्राप्त हो एसी कामना करते हैं। उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो की भी प्रार्थना करते है।

अपने आपको जानो

इंगलैंड में मैं एक डाक्टर और उसके मित्रों के साथ देवात्मा सत्गुरू के अद्वितीय कार्य सम्बन्धी हितकर बातचीत करने लगा, तो डाक्टर ने अपने नौजवान इंजीनियर पुत्र, एक और अतिथि जो एक गुजराती लड़की थी को भी बुला लिया। उन्होंने उन्हें कहा कि आओ तुम्हे धर्म वा रूह के विषय में कुछ लाभदायक बातें बताएं। डाक्टर साहिब के पुत्र तो चुप रहे, परन्तु वह लड़की उठकर खड़ी हो गई और कहने लगी अब 10 बज चुके हैं, मैं बहुत थकी हुई हूं, मैं सोना चाहती हूं। कमरा छोड़कर सोने के लिए तैय्यार लड़की को मैंने कहा कि आप अपनी ललित कला क्यों करते हो, कोई और ट्रेनिंग या रोज़गार क्यों नहीं करते। उसने कहा कि मैं इस कला को पसंद करती हूं। फिर पूछने पर कि आप इसे क्यो पसंद करते हो? सांईसदान, डाक्टर या इंजीनियर बनना क्यों पसंद नहीं करते? इन प्रश्नों का उत्तर उसे न आया, वह सोने के लिए जाती हुई बैठ गई और सुबह के 4 बज गए, और साथियों के समेत सवाल करती रही। बार बार यह महसूस किया कि इन पक्षों में तो कभी ध्यान ही नहीं गया और न कभी सोचा है। मुझे जीवन में एक नई सोझी प्राप्त हुई है कि मुझे तो अपने विषय में कुछ पता ही नहीं।

संसार के प्रसिद्ध दार्शिनिक सुकरात को उसके मित्र फिलासफर ने प्रश्न किया कि जो पुस्तकें तुमने पढ़ी हैं, वह हमने भी पढ़ी हैं, जो ज्ञान तुम जानते हो, वह हम भी जानते हैं, परन्तु फिर भी दार्शिनिक तुम्हें महान दार्शिनिक और उस्तादे ज़मा की उपाधि से सम्मानित करते हैं, तुम्हारे साथियों को लोग साधारण दार्शिनिक कहते हैं। इस प्रश्न का सुकरात ने बहुत सुन्दर और ऐतिहासिक उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि तुम समझते हो तुम बहुत कुछ जानते हो, तुमने वह विषय भी बताए हैं, बेशक वही विषय मैं तुम्हारी तरह ही जानता हूं, परन्तु मेरी समझ कुछ और है।

मैं समझता हूं कि मैं यह जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। उस समय सुकरात के सामने यही विषय था कि वह अपने आपको नहीं जानता। उन्होंने संसार को यही सन्देश दिया था कि Know Thyself (अपने आपको जानो)

मनुष्य बहुत कुछ जानता है, वह बहुत बड़ा विद्वान भी है। परन्तु वह अपने आपको आम करके नहीं जानता। मनुष्य सुखों का रसीया वा आशिक है। सुख ही उसके जीवन का धुरा है। वह सुखों का, सुखों के स्त्रोत साधनों का वा पदार्थों का ढेरों ज्ञान रखता है। परन्तु वह अपने बारे में न केवल ज्ञान नही रखता, बल्कि उसकी ज़रूरत भी अनुभव नहीं करता, न वह यह जानता है कि वह अपने बारे ज्ञान नहीं रखता।

सुखों का वा सुखों के साधनों का ज्ञान रखता है, परन्तु जब तक उसे अपना ज्ञान नहीं होता वह सुखी नहीं हो सकता। वह दुखों से यह ज्ञान रखकर भी नहीं बच सकता कि वह अपने आपको नहीं जानता भाबा फिजिकस की संस्था में दो प्रोफैसर गाढ़े मित्र थे, वह एक दूसरे को बड़ा प्यार करते थे, वह एक फलैट में रहते थे, उनमे से एक का ब्याह हो गया। शादी शुदा मित्र ने चाहा कि कंवारा मित्र नया घर ढूंड ले, परन्तु उसने कहा जिसने शादी करवाई है, वह अलग घर ले, इस सोच ने दोनों को एक दूसरे का विरोधी बना दिया। आख़िर एक ने दूसरे को गोली मार दी। यदि वह अपने आपको वा अपनी परिचालक शक्तियों को जानते तो यह दुर्घटना न घटती।

एक पति ने अपनी पत्नी को कहा कि उसके पिता दिल्ली की बड़ी कोठी उसके नाम लगा दें। वह अकेली लड़की थी। पति ने कहा कि मरने के बाद भी तो छोड़नी है, अभी क्यों नहीं लगा देते। परन्तु उस लड़की के पिता इसके लिए भी तैय्यार नहीं हुआ कि जीते जी हम वह नहीं कर सकते। प्रोफैसर ने धमकी दी कि कोठी मेरे नाम लगवा दो नहीं तो सारी उमर तुम्हे पछताना पड़ेगा। पिता फिर भी नहीं माना। प्रोफैसर ने जेब से साईनायड निकाला और ज़ुबान पर रखकर आत्मघात कर गया। क्या वह अपनी लालची प्रकृति को जानता था कि एक दिन वह उसे आत्मघात करवा देगी?

एक एम०बी०बी०एस फौजी रिटायरड अफसर का उसके एम०बी०बी०ऐस बेटे के बाल कटवाने पर झगड़ा हो गया। बेटा बाल कटवाने की आज़ादी चाहता था, पिता ख़फा हो गया और बेटे ने तीन मंजिला बिलडिंग से छलांग मारकर आत्म हत्या कर ली। क्या उसे अपना आप दिखाई देता था? बिल्कुल नहीं। परिवारों में कलह कलेश होता है, उसके कारण हमारे जीवनों में होते हैं, परन्तु उसका ज्ञान नहीं होता, सब दूसरों को दोषी ठहराते हैं, अपने आपको नहीं जानते

जगत प्रसिद्ध फिलासफर अरस्तु, संसार का चोटी का आदमी था और चोटी का ज्ञानी था। जब सिकन्दर ने उसके भतीजे को दोषी मानकर उसकी फांसी की सज़ा क्षमा करने से इन्कार कर दिया, तो अरस्तु ने ज़हर खाकर अपनी जान दे दी। इतना बड़ा ज्ञानी भी अपनी शक्तियों को नहीं जानता था।

अरस्तु से बड़ा ज्ञानी उस समय कोई नहीं था। वह इतना बड़ा ज्ञानी होकर अपने आपसे पूर्णत: अनजान था। उसको अपने स्वभाव का पता नहीं था। उसको अपने अन्दर की उन रूचियों का पता नहीं था, जो उसे एक दिन आत्मघात करने के लिए मजबूर कर देंगी। अपने अन्दर की रूचियों का ज्ञान ही अपना ज्ञान है अपनी भावनाओं का ज्ञान ही अपना ज्ञान है।

हमारे दुखों वा मौत के कारण हमारी वृतियों में वर्तमान हैं, हमे गरीब और कंगाल बनाने वाली, हमें बेइज्ज़त वा रूसवा करवाने वाली, हमें दूसरों से लड़ाने वा जेल पहुंचाने वाली, हमारी वृतियां हैं। हमें महान बनाने वाली, हमारी उमर घटाने, बढ़ाने वाली हमें उचित सुख वा शान्ति प्रदान करने वाली हमारे भीतर की रूचियों वा परिचालक शक्तियां हमारे भीतर वर्तमान हैं। हमारे भीतर सुखों के लिए आकर्षण वर्तमान हैं। सुखों के प्रति आकर्षण ही रुचियां है। इन रुचियां का ज्ञान मनुष्य को नहीं है। अपनी रूचियों वा परिचालक शक्तियों को जाने बिना कोई मनुष्य अपने को नहीं जान सकता और दुखों से भी नहीं बच सकता। अपने स्वभाव को जानना ही अपने आपको जानना है।

मनुष्य कितना बड़ा ज्ञानी हो, डाक्टर वा पी० एच० डी० हो। वह ग्रन्थों वा रचता हो, उच्च पदधारी हो, परन्तु अपने स्वभाव को न जानकर दुखों के जाल में फंस जाता है। घोटालों व हत्याओं में फंसे हुए बड़े बड़े पदधारी इसका जीवित उदाहरण हैं।

होश रखने वाले मनुष्य यह जानना चाहते हैं कि उनका कौन सा शारीरिक अंग कमज़ोर है, इसलिए उसकी रक्षा की ओर विशेष ध्यान देते हैं और फिकर रखते हैं। किसी के घुटने, दांत, कान, आखें आदि कमज़ोर हैं, उनको विशेषज्ञ को दिखाने का फिक़र करते हैं।

शारीरिक अंगों की तरह अपनी आन्तरिक रुचियों के ज्ञान की भी अतिशय अवश्यकता है। विशेष रूप से मनुष्य अपने भीतर की बुरी रूचियों का ज्ञान न पाकर दुखों के घेरे में आ जाता है।

मनुष्य अपनी तेज से तेज अक्ल रखकर जैसे अपने आप अपने शारीरिक अंगों का सीधा ज्ञान नही पा सकता, उसी प्रकार अपनी तेज अक्ल रखकर भी वह अपनी आन्तरिक रूचियों को नहीं देख सकता। इसके लिए उसे उच्चतम रोशनी की अवश्यकता है, जो रोशनी मनुष्य के आत्मा की बनावट को उस पर उज्जवल कर दे। उसकी रूचियों को रोशन कर दे। उन के क्या परिणाम होंगे वह दिखावे। इस रोशनी के बिना उसे अपना आप दिखाई नहीं दे सकता।

उपरोक्त उच्चतम ज्योति, देवात्मा की देव ज्योति है, जिसको उनके अद्वितीय रूप के साथ जुड़कर मनुष्य प्राप्त कर सकता है। मनुष्य देवात्मा की ज्योति का मोहताज है। इस ज्योति में अपनी नीच रूचियों, उनके द्वारा आने वाले दुखों, उनसे पतन अपनी अक्ल से नहीं देख सकता। नेचर ने अपने आपका ज्ञान पाने के लिए मनुष्य को देवात्मा की देव ज्योति का उपहार प्रदान किया है। जितना कोई अधिकारी आत्मा देव ज्योति के मण्डल में सांस लेता है, उतना ही वह अपने आपको देखने के योग्य होता है और अपने नाश वा दुख से बचने की योग्यता प्राप्त करता है।

मनुष्य को और विज्ञान, ज्ञान की अपेक्षा अपने आपका ज्ञान, अपनी रूचियों का ज्ञान, अपनी रोगी वा घटिया वृतियों का ज्ञान पाने की सबसे अधिक अवश्यकता है। विस्फोटक पदार्थो की तरह नीच रूचियां भी जीवन में विस्फोट पैदा करती हैं और दुखांत का कारण बनती हैं।

जैसे बम्ब से खेलने वाला बच्चा उसके परिणाम से अनजान है और वह विस्फोट से उड़ जाता है, उसी प्रकार मनुष्य अपनी विस्फोटक रूचियों से अनजान है उसके परिणाम से अनजान है।

यदि अरस्तु को अपनी रूचि का ज्ञान होता कि किस परिस्थिती में वह आत्मघात तक कर सकता है, तो वह आत्मघात कभी न करता, संसार उसकी सेवाओं से वंचित न होता।

यदि प्रोफैसर अपनी रूचियों को जानता, तो दोस्तों में गोली न चलती। यह दुखांत टल जाता।

पू० भगवान अपनी अद्वितीय रोशनी में मनुष्य को उसकी रूचियों का ज्ञान देते हैं, उन्हें अनुचित दुखों से बचाकर सुख शान्ति का भागी बनाते हैं।

मनुष्य को सबसे अधिक अपनी रूचियों का ज्ञान पाने की अवश्यकता है देवात्मा की रोशनी मे यह सम्भव हैं काश! मनुष्य यह जान सके, मनुष्य जीवन की इसी में सफलता है।

ज्ञानी होना हो जो सम्भव अपने को पहचानेंगे,
अपने प्रति अज्ञानी रहकर, ज्ञानी नहीं कहलाएंगे।
क्या है यह अस्तित्व अपना, जो बदलता रात दिन,
किस गति की दिग है जाता, तत्व उसका जानेंगे।
हो यह जीवन नष्ट कब, कैसे बचे पाए विकास,
सत्य जो जो इस विषय में, उनकी शिक्षा पाएंगे।

अपने प्रति मिथ्या विश्वास

यह प्रकृति का नियम है कि धरती के आकर्षण के कारण पानी नीचे की तरफ ही जाता है, उसी प्रकार यह भी नियम है कि मनुष्य अपने आपको वा अपने से सम्बन्धित हर वस्तु को प्यार करता है। 'मैं' के प्यार के कारण मनुष्य अपने आपको प्यार ही नहीं करता, अपने आपको अच्छा भी समझता है। यह मनुष्य प्रकृति ही है कि वह अपने दोष, अपराध और खराबी को भी खराब वा घृणित नहीं देखता या उतनी मात्रा में घृणित नहीं देखता, जितनी घृणित वह होती है। मनुष्य अपनी वा अपने से सम्बन्धित किसी जन की निन्दा या उसे घटिया साबित करने वाले को घृणा करता है। प्रशंसा से वह खुश होता है चाहे कोई झूठी प्रशंसा ही क्यों न करे। अपने आपको बार बार ठीक वा अच्छा देखने से उसे सुख वा खुशी प्राप्त होती है। यही जाप अन्दर ही अन्दर मनुष्य करता रहता है कि मैं ठीक हूं, मैं बढिया हूं, मैं योग्य हूं, मै श्रेष्ट हूं। यह जाप मनुष्य को सुख प्रदान करता है।

मैं ठीक वा अच्छा का जाप करते करते उसे अपने सम्बन्ध में यह विश्वास होने लगता है। वह अपने शरीर को भी बढ़ चढ़ कर सुन्दर देखता है, अपने दिमाग, अक्ल, विद्या सब कुछ बढ़िया देखता है। वह अपने मत, विश्वास, रूचि, राए आदि सबको ठीक निर्दोष देखता है। यह नहीं कि हमारे से सुन्दर शरीर वा बढ़िया दिल दिमाग रखने वाले जन वर्तमान नहीं हाते, लेकिन मनुष्य सचाई को स्वीकार न करके अपनी 'मैं' के पिंजरे में ही क़ैद रहता है। दूसरों को झूठ मूठ अपने से घटिया विश्वास करता है।

यह 'मैं' का जाप दूसरों के गुणों, उनकी महानता के विषय में हमें अन्धकार में रखता है। हमारा न अपने प्रति विश्वास न दूसरों के बढ़िया रूप को देखना ठीक होता है। अपने प्रति ऐसे झूठे विश्वास का नाम ही घमंड वा अहंकार है। हम जितना अपने आप में ठीक वा बढ़िया समझने के विश्वासी हो जाते हैं, उतने ही कई प्रकार से निपुण होकर भी अन्धे, पागल, मिथ्याचारी वा उल्टे दृष्टे बनते जाते हैं। बेशक ऐसा हम अनुभव न कर सकें। अपनी वा दूसरों की ठीक अवस्था देखने के विचार से हम अन्धे हो जाते हैं। असल हकीकत को न देखकर हम पागल हो जाते हैं। अपना और दूसरों को असल रूप न देखकर उल्टे रूप में देखते हैं, तो उल्टा दृष्टा हो जाते हैं। हम मित्र को शत्रु और शत्रु को मित्र समझने की भी ग़ल्ती करते हैं। एक एक बच्चा गल्त मार्ग पर जाते हुए अगर कोई माता पिता समझाने की कोशिश करें तो वह माता पिता को शत्रु के रूप में देखता है और उन मित्रों को, जो उसे ग़ल्त मार्ग पर घीसटते रहे हैं, सच्चे मित्र के रूप में देखता है।

यह उसकी उल्टी दृष्टि है। किसी की झूठी निन्दा करने वाला, हमारी झूठी प्रशंसा करने वाला मित्र दिखाई देता है, और हमारी ग़ल्ती जो सच्च होती है, दिखाने वाला शत्रु नज़र आता है। हमारा अंहकार हमें अपनी सच्ची ग़ल्ती भी देखने नहीं देता।

अपने आपको बढ़िया समझकर हम अपने चौतरफा झूठ का एक किला खड़ा कर लेते हैं, उसी में कैद होकर जीते हैं, इस कैद में ही हमें सुख मिलता है।

दूसरों की श्रेष्टता इस अवस्था में देख ही नहीं सकते न सहन कर सकते हैं। हमारी यह प्रकृति पहले भी कई सुकरातों को ज़हर के प्याले देने, कई गांधी वा लिंकन को गोली मारने के लिए विवश करती

रही है और फिर भी करती रहेगी।

जो हमारे जैसा मत या विश्वास नहीं रखता, उसको ग़ल्त वा गुमराह विश्वास करते हैं। अपने आपको ठीक देखने का विश्वास हमें किसी सुधार के योग्य नहीं रहने देता। हम केवल दूसरों को ही सुधार योग्य समझते हैं और इस बात को प्रगट भी करते हैं। कोई और हमारा रूप दिखाना चाहे तो हम सहन नहीं करते। अपनी साफ ग़ल्त वा हानिकारक बात को भी सही वा हितकर देखते है। कई बार दिखावे के लिए अपने आपको कसूरवार, अपराधी वा नलायक ज़ाहिर करके भी अपनी खुदी के जाल में ही कैद होते हैं। सारा मनुष्य जगत पुकार पुकार कर उपरोक्त सचाई को प्रगट करता है, मैं ठीक हूं के भुलेखे में रहता है।

यहां कुछ उदाहरण देते हैं कि किस प्रकार एक एक मनुष्य महा अपराध करके भी अपने आपको निर्दोष ज़ाहिर करता है।

एक दफा न्यूयार्क में रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना घटी। ऐसी घटना पहले कभी नहीं हुई थी।

थोड़ी देर पहले एक पुलीस वाले ने एक जन को लाइसैंस दिखाने के लिए कहा। एक बन्दूकधारी कराऊले नाम का व्यक्ति जो शिकार खेलने आया था, उसने पुलीस वाले पर गोलियों की बारिश कर दी। जब पुलीस वाला मर रहा था, तो कराऊले ने उसके हाथ से रिवालवर खींच लिया। उसकी भी एक गोली लम्बे पड़े पुलीस वाले पर दाग दी। वह न शराब पीता था, न सिगरेट पीता था, वह दौड़कर अपनी प्रेमका के अपार्टमैंट में छुप गया।

150 पुलीस वालों वा खोजीयों ने ऊपर की मंजिल पर घेरा डाल लिया। छत में सुराख करके, टीयर गैस छोड़कर, पुलीस वाले के कातिल कराऊले को बाहर निकालना चाहा। फिर उन्होंने साथ वाली बिल्डिंग पर मशीन गन लगा दी। न्यूयार्क के शानदार इलाके में रिवालवर वा मशीनगन से फायर होते रहे। कराऊले एक भारी गददेदार कुर्सी के पीछे छुपा बैठा रहा। 10,000 शहरी इस नज़ारे को हैरानी से देखते रहे क्योंकि ऐसा हादसा उन्होंने न्यूयार्क की गलियों में कभी नहीं देखा था।

आखिर कराऊला पकड़ा गया और कमिश्नर ने घोषणा की कि दो बन्दूक धारी आंतकवादी कराऊला इतिहास के आंतकवादियों में से एक है। वह एक पंख की आहट पर भी किसी को गोली मार सकता है। परन्तु कराऊला अपने आप के विषय में क्या सोचता था। जब पुलीस अपार्टमैंट पर फायर कर रही थी तो एक पत्र " यदि किसी के काम आ सकता हो" के Heading के नीचे उसने लिखा, जिस पर उसके ज़ख़्मों के खून के निशान थे, जो लिखते समय उस पर लग गए थे। उसने लिखा कि "मेरे कोट के नीचे एक थका मांदा दिल धड़क रहा है, परन्तु यह दिल बड़ा ही नम्र वा मेहरबान है, यह किसी को भी कोई हानि नहीं पहुंचा सकता" यह एक कातिल की बोली थी।

कराऊले को बिजली की कुर्सी द्वारा मौत की सज़ा हुई। जब वह फांसी ग्रह की ओर जा रहा था, तो उसने यह कहने की अपेक्षा कि वह दूसरों को कतल करने की सज़ा भुगत रहा है, यह कहा कि , "मैं आत्म रक्षा की सज़ा भुगत रहा हूं, मैं निर्दोष हूं।" इस सारी कहानी का सारांश यह है कि कतल करके भी उसने अपने आपको कसूरवार नहीं देखा।

यदि ऐसे अपराधी भी अपने आपको कसूरवार नहीं समझते, तो आम लोगों का क्या हाल हो सकता है, जो प्रतिदिन हमारे सम्पर्क में आते हैं। इसका अनुमान हम स्वंय लगा सकते हैं। आज जो आंतक का राज्य है, क्या कोई आतंकवादी अपने आपको कसूरवार

Published on 5th of the month
20
जुलाई - अगस्त - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

समझता है? बिल्कुल नहीं उल्टा वह पुण्य का काम कर रहे हैं, यही उनकी दलील है। फिर किसी शरीफ, और बेऐब मनुष्य को अपनी ग़ल्ती स्वीकार करनी कितनी कठिन है।

मनुष्य प्रकृति ही ऐसी है। हम अपने आपको छोड़कर सबको दोषी मानते हैं। सब लड़ाई, झगड़ों, फसादों की जड़ मनुष्य की यही प्रकृति है। यदि हर कोई अपने दोष को स्वीकार कर ले तो कचहरियों में सारे केस बन्द हो जाएं, सब अपने आपको बेकसूर साबित करने में लगे हुए हैं। जब हमारे भीतर अपने आपको ही ठीक समझने की लहर उपजे तो कराऊले को याद कर लेना चाहिए।

अमरीका की एक बड़ी यूनिवर्सिटी के वायस चांसलर को वहां पढ़ रहे चीनी विद्यार्थी ने यह प्रश्न करके चौंका दिया कि "क्या कारण है, आप सब अमरीकन, योरपियन वा मिड ईस्ट वालों की आंखें इतनी अजीब क्यों हैं, यह बेवजह बाहर को निकली हुई है?" चीनी अपनी आंखों के लिए प्रसिद्ध हैं, दूसरे लेाग उन्हें चिंकी कहते हैं, परन्तु उसे दोष दूसरों की आंखों में दिखाई दिया। मनुष्य का अपने रंग रुप के प्रति भी मिथ्या विश्वास है।

अपने आपको (Self culture) देखने के लिए अवश्यक है कि वह सच्ची रूहानी रोशनी पाकर, उसमें अपने प्रति अपने भयानक मिथ्या विश्वास को देख सके। इस विश्वास के जाने बिना स्वैविकास, उन्नति वा सुधार की आशा नहीं हो सकती।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts